श्रीरामनन्दिनी ग्रंथमाला का 9वाँ पुष्प
समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट का 16वाँ पुष्प

विविधा

रचनाकार
राजकुमार, द्रोणगिरि

संपादक
अजित शास्त्री, अलवर

प्रकाशक
समर्पण
18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, उदयपुर (राज.)
मो. 91 9414103492

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ (6 दिसम्बर 2016)

प्राप्ति स्थान : **शाश्वतधाम, उदयपुर (राज.),**
मो. 91-9414103492
: **श्री अमित जैन डीटीडीसी, दिल्ली**
मो. 91-9811393356
: **श्री दिनेश शास्त्री, जयपुर**
मो. 91-9928517346

साहित्य प्रकाशन हेतु सहयोग राशि : 25/-

मुद्रक : देशना (दिनेश) कम्प्यूटर्स
मालवीया इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर,
मो. 9928517346

प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोग करने वाले महानुभाव

1. श्री विद्या-सागर जैन, उदयपुर	2000/-
2. श्री अमित जैन, डीटीडीसी, दिल्ली	2000/-
3. श्रीरामनन्दिनी ग्रंथमाला	2000/-
4. श्री अगम जैन (आईपीएस) पुत्र श्री राजकुमार जैन, उदयपुर	2000/-

प्रकाशकीय...

अभी तक '**समर्पण**' द्वारा प्रकाशित साहित्य पाठकों के बीच भरपूर पसन्द किया गया। एतदर्थ लेखकों/पाठकों/अर्थ सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद।

समर्पण के 16वें पुष्प के रूप में राजकुमार शास्त्री द्वारा रचित कविताओं का संकलन 'विविधा' प्रस्तुत है। आशा है पाठक इस संकलन में भी साहित्य और अध्यात्म का आनन्द लेंगे।

'**समर्पण**' द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रकाशन सहयोग हेतु पाठकों द्वारा अधिकांश अर्थ सहयोग पहले ही प्राप्त हो जाता है, अत: अधिकतर साहित्य 'जो चाहो ले जाओ, जो चाहो दे जाओ' के आधार पर नि:शुल्क वितरित हो जाता है। अनेक साधर्मी अधिक संख्या में साहित्य लेते हैं तो सहयोग राशि भी प्रदान करते हैं, वह राशि जिन प्रकाशनों में सहयोग कम आता है, उनके प्रकाशन में व्यय हो जाता है।

दो वर्ष की अल्पावधि में 15 पुष्प प्रकाशित होना एवं उनका समाप्त होना हमारे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन्होंने अर्थ सहयोग प्रदान किया है, उन्हें धन्यवाद। पुस्तक के आकर्षक मुद्रण हेतु श्री दिनेश जैन-देशना कम्प्यूटर्स जयपुर को भी साधुवाद देते हैं, जो कम समय में हमारी इच्छानुसार प्रकाशन में सहयोग प्रदान करते हैं।

आप पुस्तक पढ़कर जो भी आपके भाव हों, वह 9414103492 पर अवश्य ही सूचित करें। धन्यवाद।

निवेदक
'समर्पण' चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर
मोबा. 9414103492

मन की बात

'मन की बात' जन-जन तक पहुँचाने में कविता एक सशक्त माध्यम है। मेरे मन में भी जो कुछ भावनायें जन्म लेती हैं, उन्हें कविताओं के माध्यम से व्यक्त करता हूँ, जिन्हें संकलित कर '**विविधा**' में प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकों को मेरी मन की बात अपने मन की बात लगे यह आवश्यक तो नहीं है, परन्तु इतना तय है कि अनेक सुधी पाठकों को कवितायें अपने मन के आसपास ही नजर आयेंगी।

इससे पूर्व दो काव्य संकलन 'प्रेरणा' (छन्दबद्ध) एवं 'जो कुछ कहा, सच कहा' (छन्द मुक्त) प्रस्तुत किये जा चुके हैं। इस संकलन में भजन/छन्दबद्ध/छन्दमुक्त सभी प्रकार के काव्य संकलित किये गये हैं, जो आध्यात्मिक/प्रेरक/सामाजिक विविध विषयों को समेटे हुए हैं, इसीलिए संग्रह का नामकरण '**विविधा**' किया गया है।

साधारणतया काव्य संग्रह गद्य जितने पसन्द नहीं किये जाते और स्वाध्यायी समाज में तो और भी कम ग्राह्य होते हैं, फिर भी आत्मसंतुष्टि के लिए यह संकलन प्रस्तुत है, आशा है आप इससे लाभान्वित होंगे। मैं जो भी विचार आते हैं, उन्हें पंक्तिबद्ध कर देता हूँ, उन पंक्तियों को साहित्यिक छटा देने में भाई अजित जैन अलवर का सदैव सहयोग रहता है। इन कविताओं को भी उन्होंने ही व्यवस्थित किया है।

मैं क्या कर रहा हूँ, क्या करना चाहता हूँ, यह मैं कविता के माध्यम से ही प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(दोहा)

पर की ममता छोड़कर, निज से ममता होय।
अगम आत्मा जानकर, मोह महातम खोय।।

(वीर)

हूँ अचिन्त्य शक्ति का धारक, फिर क्यों हो पर की आशा।
अष्ट कर्म के पाश काटकर, सुखदा पाऊँ विपाशा।।

शुद्धातम परिणति में जन्में, तभी होयेगा जन्मदिवस।
सुखद आत्मा को बिन जाने, दु:ख भोगने रहा विवश।।

महाभाग्य से नरतन पाया, पाये जिनवर जिनवाणी।
साधर्मी की प्रीति मिली है, जो है निज-परकल्याणी।।

तत्त्वज्ञान लेने-देने का, मंगल अवसर आया है।
दोष रहित होवे प्रभावना, बस मन में यह भाया है।।

निर्वांछक, निष्पक्ष रहूँ मैं, रहे हृदय में वात्सल्यभाव।
भूल-चूक तो होती ही है, फिर भी कुछ करने का चाव।।

ध्रुव अरु शाश्वत धाम हुए हैं, बाल-बालिकाओं हेतु।
प्रौढ़ वर्ग हित हो 'सुखायतन', भाव यही मैं बनूँ सेतु।।

सत्साहित्य पठन-पाठन अरु लेखन में जीवन बीते।
आतमहित हो अरु प्रभावना, मन में यही स्वप्न जीते।।

लौकिक कार्यसिद्धि की भावना पुण्यवानों के ही सिद्ध होती है, मेरा पुण्य कितना है पता नहीं, पर भावनायें बहुत हैं। भावनायें पूर्ण होना होंगी तो होंगी, न होना होंगी तो नहीं होंगी, पर मैं सत्यमार्ग से विचलित हुए बिना सत्य तक पहुँच सकूँ, कह सकूँ इसका पुरुषार्थ अवश्य ही करता रहना चाहता हूँ। किसी से भी बुराई किये बिना, उसकी बुराई निर्भीकता से कह सकूँ, बस यही भावना है। '**विविधा**' आपके हाथों में है, यदि कुछ अच्छा/सच्चा लगे तो अवश्य सूचित कीजियेगा।

- राजकुमार, द्रोणगिरि
मो. 09414103492

संपादकीय

कर्तृत्व में अहंकार के विसर्जन से ही व्यक्तित्व दमकता है। अहंकार विसर्जन का यह गुण बहुमुखी प्रतिभा के धनी भाई राजकुमार में भरपूर है। वैचारिक सुमेल ने विगत 36 वर्षों में इस व्यक्तित्व के प्रदेश-प्रदेश से मुझे वाकिफ करा दिया है, इनकी विचारभूमि में वृक्ष लगाने हेतु किसी बीज की आवश्यकता नहीं होती, अपितु बीज इनके मनमस्तिष्क में स्वयमेव तैयार होते हैं। कोटा, उदयपुर, बांसवाड़ा फिर उदयपुर-शाश्वतधाम तक के इन पड़ावों में तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार की नवीन गतिविधियों की उपज इसी विचारभूमि से हुई है। इसी भावभूमि से प्रसूत 'समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट' का गर्भकाल लगभग 14 वर्ष का है। इसके मातृत्व का दायित्व गुरुतर था, जो अब बाल्यरूप में आपके समक्ष है।

समर्पण से अन्य गतिविधियों के अलावा समसामयिक विषयों, पत्रिकाओं तथा नवोदित लेखकों से संबंधित रचनाओं का प्रकाशन भी मुमुक्षु समाज में विशिष्ट स्थान बना चुका है। अन्य कलमकारों के अलावा भाई राजकुमार की समस्त उपयोगी रचनाओं का प्रकाशन समर्पण द्वारा किया गया है। यह दसवीं कृति '**विविधा**' (कविता संग्रह) के रूप में सुधी पाठकों के सामने है। सभी ने सभी रचनाओं को पसंद किया। साहित्यकार यदि सामायिक घटनाक्रम से प्रभावित न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता तथा उसको साहित्य में स्थान न देना कर्त्तव्यहीनता है। भाई राजकुमार ने इस दायित्व को बखूबी निभाया है। काव्य संकलन में प्रेरणा, जो कुछ कहा सच कहा और अब विविधा - इन सभी में संग्रहीत कविताओं/गीतों में रचनाकार ने गजब की अभिव्यक्ति दी है। सत्य यह है कि अधिकांश रचनायें पॉकिट, स्लिपपेड जो इनके जेब में हमेशा रहता है उस पर लिखकर, फिर मोबाइल में वाट्सअप पेज पर लिखकर जीवन्तता को प्राप्त हुई है। बस में, ट्रेन में सफर करते हुए या इनकी प्रतीक्षा करते हुए अन्य खाली समय में इन रचनाओं का सृजन हुआ है। चूंकि इन रचनाओं को सबसे पहले मैं पढ़ता था। कई बार तो रचनाओं की ऐसी भरमार होती थी कि मैं अंदर ही अंदर खीझ से भर जाता था। अब भी हाल वैसा ही है। कविताओं के विषय/घटनायें मानों रचनाकार को खोजते हुए सामने आ-आकर चले जाते हैं। उनके साथ पूर्ण न्याय रचनाकार ने किया है। छन्द और लय में कविता सुन्दरी नृत्य करती है। शीघ्र मंजिल तक पहुँचने की उत्कंठा तथा अति आह्लाद कई बार उसे मार्ग से भी हटा देता है, उसे मार्ग पर लाने का पूर्ण अधिकार लेखक ने मुझे दिया है। मूल भावनाओं से छेड़छाड़ किये बिना कविताओं को सुसज्जित करने का भ्रम मैंने भी पाला हुआ है। प्रसंग प्राप्त विविधा में अन्य रचनाओं के अलावा सपना, ज्ञानदान-महादान, जीवन, दुनिया मतलब की, विचित्रता, सास-ससुर की सीख, अन्याय, चिड़िया - रचनायें इस कृति और कृतिकार के उद्देश्य/मनोभाव का आइना है। मैं इनसे व्यक्तिश: अभिभूत हूँ।

प्रबुद्ध पाठकगण इस कृति में छिपी हुई भावना/पीड़ा/टीस को हृदयंगम कर आवश्यक प्रतिक्रिया प्रदान करेंगे - ऐसा निवेदन है।

पुनश्च भाई राजकुमार को 'दशक लगाने पर बधाई' इस कृति के सम्पादन का निर्वाह मुझे प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

इसी पंक्ति के साथ कि -

''मैं अपनी अभिव्यक्ति के लिए जिम्मेदार हूँ, आप क्या सोचते हैं, इसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।''

- अजितकुमार शास्त्री, अलवर

समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट

एक परिचय

देव-धर्म-गुरु के चरणों में तन-मन-धन सब अर्पण।
आतमहित व तत्त्वज्ञान को, है सर्वस्व समर्पण।।

ट्रस्ट का नाम - समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट
स्थापना तिथि - 20 सितम्बर 2014

ट्रस्ट मण्डल -

संरक्षक - 1. श्री अजित जैन बड़ौदा, 2. श्री कन्हैयालाल दलावत, 3. श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, 4. श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, 5. श्री ललितकुमार किकावत लूणदा, 6. श्रीमती स्वाति जैन उदयपुर।

अध्यक्ष - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष** - अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष** - रमेशचन्द वालावत उदयपुर, **मंत्री** - डॉ. ममता जैन उदयपुर, **सहमंत्री** - पीयूष शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी** - पण्डित अशोकुमार लुहाड़िया तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, ऋषभकुमार शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. महेश जैन भोपाल, रतनचन्द शास्त्री कोटा।

ट्रस्ट की सामान्य रूपरेखा

उद्देश्य - 1. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार करना। 2. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरुकता पैदा करना। 3. अनुपलब्ध, आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना। 4. सर्वोपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना। 5. चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त सहयोग को वितरित करना।

कार्य पद्धति - **1. सबसे सहयोग-सबको सहयोग** की भावना से साधर्मियों से प्राप्त सहयोग साहित्य/चिकित्सा/शिक्षा पर आवश्यकतानुसार वितरित करना। हमारा प्रयास होगा कि फण्ड बनाने की अपेक्षा प्रतिवर्ष प्राप्त सहयोग को उसी वर्ष वितरित कर दिया जाये। 2. व्यक्ति या संस्था के नाम के लिए नहीं, पर काम के लिए काम। 3. सर्वोपयोगी (अपनी समझ के अनुसार) योजना को सबके समक्ष रखना, यदि सहयोग प्राप्त हुआ हो तो उस योजना/कार्य को करना, नहीं तो..... ? 3. अच्छी बातें-सच्ची बातें (अर्थात् शाश्वत सत्य) ज्यादातर लोगों तक पहुँचे, ऐसा प्रयास करना।

गतिविधि - 1. साहित्य प्रकाशन, 2. **संस्कार सुधा** मासिक पत्रिका का प्रकाशन, 3. **स्नातकों द्वारा स्नातकों के लिए शिक्षा चिकित्सा सहायता योजना,** 4. साधर्मी वात्सल्य योजना - साधर्मियों से स्वैच्छिक सहयोग लेकर योग्य साधर्मियों को शिक्षा/चिकित्सा सहयोग पहुँचाना।

निवेदन - यह छोटीसी संस्था आपके सहयोग से समाज में कुछ कार्य कर रही है, यदि आप हमारे विचारों से सहमत हों, तो आप भी आर्थिक सहयोग प्रदान कर या अपनी सहमति देकर हमारा उत्साहवर्धन कर सकते हैं।

हमारा उद्देश्य कुछ अलग ढंग से समाज में जागरूकता लाना व सहयोग करना है। आपके सुझाव व सहयोग सदैव अपेक्षित हैं। आप जब, जो, जैसे कर सकते हैं, आत्महित व समाजहित में जरूर कीजिए। बस यही अनुरोध है।

- निवेदक -

समस्त ट्रस्ट मण्डल, समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट,
उदयपुर (राजस्थान)

विषयानुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ	क्र. विषय	पृष्ठ
1. चल उड़ चल रे पंछी	11	25. पौरुष जगाओ	34
2. भोग भुजंग तजो रे	11	26. उत्तम क्षमा	35
3. बसना सम्हल-सम्हल के	12	27. बलवान कौन ?	35
4. शुभकामना	13	28. कोई नहीं है अपना	37
5. दुनिया मतलब की	14	29. कहान गुरु के शिष्य...	39
6. चैतन्यचक्रवर्ती	15	30. दश-हरा	41
7. नया वर्ष	16	31. अन्याय	43
8. स्मारक की स्वर्ण जयन्ती	17	32. दीपावली	44
9. यदि महावीर का जन्म न होता	18	33. नव वर्ष (वीर नि. सं.)	46
10. सपना नहीं अपना	19	34. ज्ञानदीप	48
11. महावीर है नाम मनोहर	20	35. चेतन नाम सार्थक करो	49
12. ज्ञानदान महादान	21	36. व्यापार	50
13. क्रमनियमित	23	37. भक्ति	52
14. जीवन	24	38. दृष्टि	52
15. चाहत से न काम हो...	25	39. बंजर भूमि	53
16. श्रुतपंचमी पर्व	26	40. हम	54
17. समय है आया जगने का	27	41. चिड़िया	56
18. आतमहित की रहे भावना	27	42. योग्यता	58
19. राग भाव के विविध रूप	29	43. भीड़ में भी अकेले	60
20. फरियाद	30	44. जनवाणी और जिनवाणी	62
21. दुनिया मतलब की	30	45. सेल्फी	64
22. तपन	31	46. होने से - नहीं मानने का...	66
23. विचित्रता	32	47. आज चौदस है	67
24. सास-ससुर को सीख	33	48. जिसे जो समझा...	69

ॐ

विविधा

1.

चल उड़ चल रे पंछी

चल उड़ चल रे पंछी, ये तो देश पराया।।टेक।।

धन-पद-सदन-वसन अरु भूषण, सब कर्मोदय पाया।
माना इनका स्वामी निज को, मतवाला हो बौराया।।1।।

गोरी काली-मोटी-पतली, यह सब तो है काया।
चेतन का न इसमें अंश है, सब पुद्गल की माया।।2।।

राग-द्वेष अरु क्रोधादि तो, सब विभाव हैं भाया।
इनसे निज को तन्मय माना, निज स्वरूप बिसराया।।3।।

तन-धन-परिजन-रंग-राग तो, बिच नाशे बिच पाया।
तू तो चेतन अनादि अनंत है, क्यों क्षण में भरमाया।।4।।

11.8.2016

2.

भोग भुजंग तजो रे

भोग भुजंग तजो रे भविजन, भोग भुजंग तजो।।टेक।।

विषय भोग अति ही दुखदायक, क्यों सुखकार लखो।
जे सब तो हैं मिष्ट जहर सम, इनतें दूर भजो।।1।।

जैसे ज्वरयुत किसी पुरुष को, मिष्ट भी कटुक लगो।
त्यों मिथ्यामति होय तुम्हारी, दुखदायक सुखकार लखो।।2।।
तू तो है सुखवंत गुणाकर, भोगन बीच फंसो।
भोग-भोग कर इन भोगन को, नरकनि माँहि परो।।3।।
चेत चेत नर अब तो चेतो, निज स्वरूप निरखो।
तू तो ज्ञानानंदमयी तज, हालाहल पीयूष पियो।।4।।

14.6.2016

3.

बसना सम्हल-सम्हल के

बसना सम्हल-सम्हल के, नये घर में बसने वाले।
चलना सम्हल सम्हल के नये पथ पर चलने वाले।।
विषयों का विष यहाँ पर, चहुँ ओर ही है फैला।
है कीच कषायों ते, हर दिल यहाँ पे मैला।।
विष कंटकों से बचना, इस जग में रहने वाले।।1।।
संयम न धर सकें जो, है खेदरूप वर्तन।
स्थूल पाप त्यागन, इस पथ करे प्रवर्तन।।
पापों के पथ में प्यारे, चलना सम्हल-सम्हल के।।2।।
जिनधर्म को न तजना, हो उदय वज्रसम गर।
नृपवत् मिले विभूति, या ठोकरें हो दर-दर।।
उदयों से बचके रहना, उदयों में रहने वाले।।3।।
जब तक भी घर में बसना, सौजन्य सबसे रखना।
जिनवाणी-पूज्यजन की, आज्ञा को सर पे धरना।।
शिवपथ तुम्हें मिलेगा, जिनपथ पे चलने वाले।।4।।

30.11.2015

4.

शुभकामना

तुम चलो मुक्ति की ओर, मैं फिर आता हूँ।टेक।।
निष्कंटक पथ में अब तक मैंने, विषकंटक बोये हैं,
विषकंटक की कटुक चुभन से, भव-भव में हम रोये हैं।
विषकंटक पथ को निष्कंटक करके फिर मैं आता हूँ।।
मिले जगाने वाले अनगिन, पर अब तक हम सोये हैं,
मोह वारुणी पी पी करके, स्वर्णिम अवसर खोये हैं।
मोह नींद में सोये हैं जो, उन्हें जगाकर आता हूँ।।
फैला है अज्ञान तिमिर, नहीं स्व-पर का होता है ज्ञान,
हित-अनहित अरु पूज्य-अपूज्य से सारा जग सोया बेभान।
भेदज्ञान की ज्योति जलाकर, फिर मैं आता हूँ।।
विषय भोग के साधन घर-घर, हैं कषाय में सब जन मस्त,
पंथवाद को धर्म मान सब, मात्र प्रदर्शन में हैं तप्त।
वीतरागता ही शिवपथ है, यह समझाकर आता हूँ।।
आचार्यों विद्वानों ने भी ज्ञान का दीप जलाया था,
गुरु कहान ने कलिकाल में, अमृत रस बरसाया था।
ज्ञान दीप नई पीढ़ी को दे फिर मैं दौड़ा आता हूँ।

1.10.2016

महादान बस ज्ञान है, औषध दान सुदान।
ज्ञानौषध भरपूर हो, तब हो नव निर्माण।।

5.

दुनिया मतलब की

दुनिया मतलब की, दुनिया मतलब की।
बिन मतलब कोई बात न पूछे, दुनिया मतलब की।।

काम पड़े तो बनते यार, गले लगाकर करते प्यार।
बिना काम के सब बेकार, दुनिया मतलब की।।1।।

मतलब से ही भगवान जाप, मतलब से तू लगता आप।
गधे से भी कह देवें बाप, दुनिया मतलब की।।2।।

मतलब से सब लगते भाई, बिन मतलब तो आफत आई।
क्षण में अपने होंय पराई, दुनिया मतलब की।।3।।

जो देखो सब साधें मतलब, सारी दुनिया बनी मतलबी।
फिर भी सब जाने गाते-फिरते, दुनिया मतलब की।।4।।

तुम भी अपना मतलब साधो, निज आतम को ही आराधो।
पर की चिन्ता में मत जागो, दुनिया मतलब की।।5।।

13.8.2016

बारह भावना ?

तन-धन भोग अनित्य सब, शरण न कोई देय।
चतुर्गति के दुःख सब, एकाकी ही लेय।।

परिजन-पुरजन अन्य हैं, और अशुचि है देह।
मोह-राग-रुष दुःखद हैं, निज से करो सनेह।।

कर्म घटे शुद्धि बढ़े, देखो शाश्वत लोक।
निज की बोधि सुलभ है, धर्म साथ क्या शोक।।

6.

चैतन्यचक्रवर्ती

मैं चैतन्यचक्रवर्ती हूँ, गुण अनंत का हूँ धाम।
स्व-पर प्रकाशक ज्ञान हमारा, मात्र जानना मेरा काम।।

नहीं पारस-चिन्तामणि अरु कल्पवृक्ष से मुझको काम।
यह देते हैं विषय भोग जड़ मैं हूँ चेतन आतमराम।।

सर्व प्रयोजन सिद्धि होती, निज की महिमा आने पर।
अन्य परिग्रह रंच न मेरा, निज दर्शन हो जाने पर।।

निज आतम ही ब्रह्मरूप है, उसमें ही जो रम जाये।
निजानंद में केलि ही तो ब्रह्मचर्य है कहलाये।।

विषय-वासना सभी भागती, निजानंद मिल जाने पर।
इन्द्रिय सुख अरु ज्ञान हेय हों, ज्ञानानंद के आने पर।।

जो निज वैभव को भूला है वह विषयों में भरमाता।
जड़ वैभव को जोड़-जोड़ कर सुखाभास में भटकाता।।

जिसने निजप्रभुता को जाना, अन्य परिग्रह से क्या काम ?
विषयभोग भी विषसम लगते, निज सुख भोगे आतमराम।।

निज आतम आनंदमयी है, भोगो जिसको सुबहो शाम।
दशलक्षणमय धर्म प्रकट हो आकुलता का फिर क्या काम।।

26.9.2015

निजहित को जिनमत मिला, जनहित में लग जाय।
चिन्तामणि सा धर्म पा, व्यर्थ ही चले गंवाय।।

7.

नया वर्ष

सुबह-सुबह सब मित्र कह रहे, नया मुबारक हो यह साल।
धन-परिजन अरु पद वृद्धि को, लाभ अज्ञ जन कहते हैं।।
मित्र वचन सुन मैं मुस्काया, सोचा कैसा यह नव वर्ष।
जीवन पापमयी है बीते, मोह-राग संग कैसा हर्ष।।
ईर्ष्या अरु दुष्कर्म करें सब, कहें मुबारक हो यह साल।
चाल न बदली यदि जीवन की, कैसे बदलेगा तब हाल।।
धन-परिजन अरु पद वृद्धि को लाभ अज्ञजन कहते हैं।
जीवन में समता-शांति हो, विज्ञ चिंतवन करते हैं।।
धनपदयश भाग्योदय से होते, अतः चाह है बिल्कुल व्यर्थ।
सुख-संतोष-ज्ञान तब मिलता, जब होता सम्यक् पुरुषार्थ।।
हो सम्यक् पुरुषार्थ जिस घड़ी, वही कहाता है नव वर्ष।
सुप्रभात, शुभ दिन भी वह है, जब हो ज्ञान-चरित उत्कर्ष।।

1.1.2016

सवैया

रात-दिन पाप करें, छल व प्रपंच करें,
भाव बस एक रहे, धन हमें चाहिए।
मित्रों को शत्रु करें, शत्रु को मित्र करें,
हाथ जोड़े पांव परें, पर पद हमें चाहिए।।
मंदिर से दूर रहें, स्वाध्याय नाहीं करें,
सत्संग भाये नाहीं, मोक्षमार्ग चाहिए।
मिथ्यातम पोष रहे, कषायन रत रहें।
फिर भी यह धर्मी हैं, मुक्ति वधू चाहिए ।।

8.

स्मारक की स्वर्ण जयन्ती

वीतराग वाणी के पोषक, जयपुर में थे टोडरमल।
नाना विघ्न बाधाएँ आयीं, फिर भी गिरिवत् रहे अचल।।
मोक्षमार्ग का किया प्रकाशन, मोह तिमिर का किया विनाश।
सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका रचकर, सम्यग्ज्ञान का किया प्रकाश।।
कहान गुरु को मिला हाथ में, टोडरमल का अनुपम ग्रन्थ।
पढ़कर मोहित होकर बोले, सत्य पंथ है इक निर्ग्रन्थ।।
टोडरमल ने काम किया वह, करता है जो मोह को बन्द।
गोदिका गोत्रज टोडरमल थे, सुनकर प्रमुदित पूरणचन्द।।
उत्साहित हो जयपुर में तब, भव्य भवन की रचना की।
नाम रखा टोडरमल स्मारक, ज्ञान प्रचार की भावना थी।।
डॉक्टर भारिल्ल जब यहाँ आये, ज्ञानप्रचार की अलख जगी।
महाविद्यालय-साहित्य प्रकाशन से, मोह निशा है तुरत भगी।।
देश-विदेश में घूम-घूम कर, दादा ने फैलाया तत्त्वज्ञान।
यदि स्मारक न होता तो, हम सब रह जाते अनजान।।
देव-धर्म-गुरु हैं उपकारी, उपकारक हैं टोडरमल।
गुरु कहान अरु स्मारक भी, नाशक हैं जो मिथ्यामल।।
स्मारक की स्वर्ण जयन्ती, छाया चहुँ दिशि में है हर्ष।
करें समर्पण सब तन-मन-धन, सर्वजनीन् हो नव उत्कर्ष।।

27.2.2016

9.

यदि महावीर का जन्म न होता

मोह तिमिर का नाश न होता
सम्यग्ज्ञान प्रकाश न होता।
स्व-पर भेद विज्ञान न होता।
यदि महावीर का जन्म न होता।।

धर्म अहिंसा प्रचार न होता।
हिंसक ताण्डव कम न होता
पंच पाप का ज्ञान न होता
यदि महावीर का जन्म न होता।।

स्याद्वादमय कथन न होता
सप्त तत्त्व का ज्ञान न होता
षट् द्रव्यों का भान न होता
यदि महावीर का जन्म न होता।।

मैं ज्ञायक यह ज्ञान न होता
मैं हूँ अकर्ता भान न होता।
चिंदानंद रस पान न होता।
यदि महावीर का जन्म न होता।।

19.4.2016

सब चलें एक साथ बस नायक ही चाहिए।
सब गायें एक साथ योग्य गायक ही चाहिए।
दुखमय संसार छोड़ मुक्ति पथ हमें चलें।
राग रंग धन पद नहीं बस ज्ञायक ही चाहिए।।

10.

सपना नहीं अपना

सोते हुये इक सपना देखा
सारे जग को अपना देखा
कोई पिता था कोई था बेटा
कभी जमीं, कभी पलंग पर लेटा।
पत्नी थी प्राणों से प्यारी
बेटी लगती राजदुलारी।
धन संपत्ति पद वैभव पाया
शहर बीच था मकां बनाया
कभी खुशी, कभी गम थे गाते,
दुनियां भर के रिश्ते नाते।
अकड़-अकड़ कर मैं था चलता
मैं ही सब कुछ हूँ ये भ्रम था।
परिजन-पुरजन सब आधीन
मैं अमीर बस, सब हैं दीन
कर्तापन के अहंकार में
भार वहन करूँ दिन-रात मैं।

बिन चाहे पत्नी गई छूट
धन लीना जब सुत ने लूट।
पुत्री गई विधर्मी संग
उतरा यौवन का सब रंग।
दीन हीन अरु पामर दुखिया

मुझे दु:खी लख जग था सुखिया।।

चिल्लाया मैं प्रभु बचाओ
मुझ गरीब को कोई छुड़ाओ
मैंने जग जोड़ा, तब छूटा
चिल्लाहट में सपना टूटा।।

मैं पूरा कोई नहीं अपना
सारा जग था कोरा सपना।
मोह नींद में अब नहीं सोना
निज को भूल कभी नहीं रोना।।
जागा जब जग सपना लेखा
निज को ही बस अपना देखा।।

18.4.2016

11.

महावीर है नाम मनोहर

चैत्र शुक्ल तेरस को जन्मे, मुदित हो गये तीनों लोक।
मात-पिता त्रिशला सिद्धारथ, कुण्डलपुर हो गया अशोक।।

दूज चन्द्र सम नित ही बढ़ते, वर्धमान तुम कहलाये।
धीर-गंभीर सुभग मुद्रा को, शचिपति भी लखने आये।।
बाल्यावस्था खेल-खेल में, वीर-अतिवीर नाम पाया।
दर्श मात्र से शंका दूर हुई, सन्मति हो मुनिगण गाया।।

कामदेव को कर परास्त, महावीर नाम सार्थक कीना।
नग्न दिगम्बर दीक्षा लेकर, मुक्ति पथ पर पग दीना।।

अष्टादश दोषों से विरहित, लोकालोक के हो ज्ञाता।
निजानंद में केलि करते, पर का है ना रस भाता।।

कृपादृष्टि न हो भक्तों पर, दुर्जन पर किंचित् न रोष।
नहीं डराते, न डरते हो, निज वैभव के अक्षय कोष।।
क्रमबद्ध का ज्ञान कराया, स्याद्वाद शैली द्वारा।
जो वक्ता अभिप्राय समझता, वह जग में न कभी हारा।।
अणु-अणु है स्वतंत्र इस जग में, कोई किसी का न काम करे।
मैं भी हूँ परिपूर्ण स्वयं में, जो समझे वह नहीं डरे।।

महावीर है नाम मनोहर, मंगल-उत्तम सुखकारी।
उनका दर्शन-चिंतन है, सब भव्यों को आनंदकारी।।
धन्य भाग्य हैं हम जीवों के, जन्म कल्याण मनायें आज।
वीरप्रभु के पथ पर चलकर, निश्चित मिले मोक्ष साम्राज्य।।

18.4.2016

12.

ज्ञानदान महादान

वसुधा पर फैला अज्ञान, आकुलतामय दु:ख की खान।
निज को पर, पर को निज जान, अत: सुक्ख का नहीं निशान।।

मैं पर का, पर मेरा कर्ता, यही मानकर दु:ख है भरता।
गोरा-काला मेरा रूप, भूला निज चैतन्य स्वरूप।।

छाया है अज्ञान महातम, न जाने को हूँ मैं? को मम?
पंच पाप में हुआ प्रवीण, सप्त व्यसन में होकर लीन।

भक्ष्य-अभक्ष्य का ज्ञान नहीं है, हित-अनहित पहचान नहीं है।
रात्रि भोजन भी यह करता, विषय-भोग में ही नित रमता।।

धर्म नाम पर करे प्रदर्शन, भूला वीतराग का दर्शन।
धनपद हित व्यापार करे नित, पूजा पाठ करे इस ही हित।।

दिशा-दिवस माने मंगलमय, अंध विश्वास करे जो दु:खमय।
घृतहित है जल मंथन करता, शीतलता हित अग्नि में जलता।।

बाल्यावस्था में सद्ज्ञान, मिल जाये तो बने महान।
अत: खुले चहुँ दिशि विद्यालय, विद्या संग जो सुख के आलय।।

कन्यायें भी यदि पढ़ जायें, तीन पीढ़ी घर की तर जायें।
दिव्य ज्ञान बन दीपक आप, उभय गोत्र फैलायें उजात।।

निज को निज पर को पर जाने, पर को फिर कर्ता न माने।
भक्ष्याभक्ष्य का होय विवेक, परिजन ज्ञानी अरु हों नेक।।

सती अंजना सम हो नारी, हनुमानवत् सुत हो भारी।
यदि नारी बन जाये सीता, लवकुश ने है सबको जीता।।

कितने आये विकट प्रसंग, समता धरकर रहें असंग।
ज्ञानदान सर्वोत्तम दान, जिसका फल है केवलज्ञान।।

8.3.2016

हम चाहते हैं हर जीवन में श्रावकाचार हो।
हम चाहते हैं साधर्मियों में निश्छल प्यार हो।।
बाल हों या युवा उनके हाथ कुछ और नहीं।
अशरीरी आत्मा बताने वाला समयसार हो।।

13.

क्रमनियमित

जो कुछ होना वही है होता, और अन्यथा कभी न होता।
अच्छा-बुरा हुआ यह कह कर, राग-द्वेष वश जग रोता।।
जन्म कहाँ और कब होना है, किस विधि से जीवन जीना।
कब तक अरु किस ठौर है रहना, क्या खाना और क्या पीना।।

मान मिले अपमान मिले, सास्ती या कि प्रशस्ति मिले।
जो जाना सर्वज्ञ देव ने, मानो तो सुख कमल खिले।।
राग-द्वेष, सुख-दु:ख पर्याय, किस किसकी कब होगी आय।
प्रतिक्षण होता जो भी कार्य, पूर्ण व्यवस्थित है वह भाई।।

वीतराग के ज्ञान इतर, क्या बदलेगा कोई इन्सान।
पूर्ण अकर्ता केवल ज्ञाता, मेरी है बस ये पहचान।।
जिस विधि, जिस थल, जिसका, जो जब, होना है वह ही होगा।
पुरुषार्थ है सत्य समझना, न माने तो दु:ख होगा।।

जो कुछ होता बाहर होता, मुझमें कभी न कुछ होता।
मैं त्रिकाल ध्रुव चिदानन्द जो, माने वह सो सुख बोता।।
निर्भय अरु निर्भार रहेगा, जो समझेगा जिनवाणी।
चतुर्गति के दु:ख मिटाकर, निजसुख देवे कल्याणी।।

14.12.2015

धर्म मार्ग जो ले चले, साधर्मी कहलाय।
धर्म पत्नी अरु धर्म पति, चलें मार्ग सुखदाय।।

14.

जीवन

अब तक जीवन ऐसा बीता।
बहुत भरा पर अब तक रीता।।

तन को पाकर, तन को पोसा।
बाटी खाई, खाया डोसा।
भक्ष्य-अभक्ष्य के भेद बिना।
खाया-पिया मैं रात-दिना।
अंत समय तन दे गया धोखा।।1।।

परिजन के हित तज आतम हित।
धन वैभव सब जोड़ अपरिमित।
न्याय-नीत पर ध्यान दिया ना।
लगा पाप में धर्म किया ना।
पता चला न क्यों था जीता।।2।।

पुण्यवर्धनी सभी क्रिया कीं,
संयम साधा अरु पूजा कीं
मान पोषने दान दिया।
जग रींझे उपदेश किया।
धर्म कहाँ ये पुण्य नहीं जब चला पता।।3।।

धर्म है छोड़ा,धन पाने को
धन को छोड़ा पद पाने को।
सब संस्थायें मैं ही चलाऊँ।

कर्तापन में पिऊँ न खाऊँ।
पद की दौड़ में, अन्य ही जीता।।4।।

परिजन पुरजन रहे सताते
धन-पद-यश कुछ काम न आते।
धर्म छोड़ क्यों भागे जाते,
बार-बार सत्गुरु समझाते
फिर भी रहा मैं भ्रम में जीता।।5।।

23.4.2015

15.

चाहत से न काम हो, कारणवत् हो काम

तू नित भव भोगों को चाहे, पुण्य बिना तू कैसे पाये?
सुरपति पद की कर अभिलाषा, पाप किये से नरक ही जाये।।

सम्यग्दर्शन की चाहत से कभी न सम्यग्दर्शन होता।
सुख शान्ति हित राग द्वेष कर व्यर्थ फिरे तू जग में रोता।।

मुक्ति मिले तू यह कहता पर, पाप-पुण्य में लगा हुआ है।
पाप-पुण्य तो दुखमय भाई, इधर खाई तो उधर कुंआ है।।

वर्तमान में पूर्ण शुद्ध हूँ, ऐसी श्रद्धा से हो सम्यग्दर्शन।
रहे देह में लखे विदेही, तभी नष्ट हो मिथ्यादर्शन।।

कारण जैसा सदा कार्य हो, शाश्वत नियम कहा जिनवर ने।
सुखसागर के ज्ञानभान बिन, सुख नहीं मिलता त्रिभुवन में।।

25.6.2016

16.

श्रुतपंचमी पर्व

भवभय नाशक माँ जिनवाणी।
जीवमात्र की है कल्याणी।।
वीर प्रभु के मुख से निकली।
ज्यों नभ में चमके है बिजली।।
कालदोष से ज्ञान हुआ कम।
जिनवच बिन न मिटता है भ्रम।।
शुभ विकल्प आया धरसेन।
होय सुरक्षित श्रुत, तब चैन।।
पुष्पदंत भूतबलि आये।
धरसेन से ज्ञान है पाये।।
जिनवाणी कीनी लिपिबद्ध।
षट्खण्डागम है श्रुतस्कंध।।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी वह शुभ दिन।
मानो ग्रन्थ में आये हों जिन।।
ग्रन्थ पूर्ण होने के शुभ दिन।
श्रुतपंचमी पर्व मनाते भविजन।।
आओ हम भी पर्व मनायें।
स्वाध्याय का नियम बनायें।।
स्वाध्याय बिन ज्ञान नहीं हो।
ज्ञान बिना सुख चैन नहीं हो।।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी।
हम सब हैं उनके आभारी।। **8.6.2016**

17.

समय है आया जगने का

भटक रहे हैं हम भव वन में, निज को भूल-भूल करके।
सुख सिन्धु शुद्धातम भूले, जीते हैं हम मर-मर के।।

सबके घर-आँगन हैं देखे, निज अन्तर में देखे कौन?
मगन हो रहे पर चर्चा में, निज चर्चा को साधे मौन।।

विकथायें तो प्यारी लगती, वीतरागता से हो दूर।
आकुलतामय जीवन जीते, अन्तर में है सुख भरपूर।।

जागो-जागो चेतन जागो, समय है आया जगने का।
पद-पैसा अरु मान-प्रतिष्ठा, तज अन्तर में रमने का।।

17.6.2016

18.

आतमहित की रहे भावना

ऋषभदेव से महावीर तक, सबने ही यह बतलाया।
अजित तत्त्व हूँ जिसे मोह भी, नहीं पराजित कर पाया।।

मैं ईशों का ईश सदा ही, जिनवर कहते मुझे महेश।
तन-धन की तो बात करूँ क्या? राग-द्वेष का नहीं प्रवेश।।

निज से ही जब ममता होगी, समता तभी प्रगट होगी।
पर से यदि ममता रक्खी तो, दुखद समस्या विकट होगी।।

अगम अनंत शक्ति का धारक, मेरा होता जनम नहीं।
पर्यायों से पार तत्त्व हूँ, मेरा होता मरण नहीं।।

भक्तों की तो बात करूँ क्या? भगवन से भी न आशा।
शोक तजूँ अशोक भजूँ मैं, रहूँ किसी का क्यों दासा।।

दिव्य-देशना का पीयूष पी, आनंदमय जीवन बीते।
सुखद विपाशा मिले मुझे जब, कैसे रहूँ फिर मैं रीते।।

जीवन के क्षण सभी समर्पण, करता हूँ मैं निजहित में।
आतमहित की रहे भावना, तत्त्वप्रचार हो जीवन में।।

तत्त्वज्ञान की हो प्रभावना, निशि-दिन ऐसा रहे विचार।
आतमहित में आगे रहकर, अप्रमाद हो करूँ प्रचार।।

जन्म मरण से रहित अजन्मा, निज ज्ञायक ही दिख जाये।
तभी सार्थक होगा नरतन, सफल जन्म तब कहलाये।।

मैंने निज वैभव पहचाना, क्या कर सकते हैं अब कर्म।
शांति दशा ऐसी पाई है, नहीं स्वर्ग ईशान-सौधर्म।।

होय आरती और अर्चना, जीवन में प्रगटा संतोष।
नहीं व्यग्रता नहीं आकुलता, मिला पूर्णतः ही परितोष।।

आतमहित के लिए कामना करते हैं, सब मेरे मित्र।
आओ सब मिल कदम बढ़ायें, यह जीवन फिर बने पवित्र।।

20.9.2015

गतियों में श्रेष्ठ एक मनुष्य गति प्राप्त है।
ग्रन्थों में श्रेष्ठ समयसार हमें प्राप्त है।।
मोह शत्रु बैठा है अभी भी हमारे ही भीतर।
क्योंकि स्वाध्याय में शिथिलता व्याप्त है।।

19.

राग भाव के विविध रूप

ज्ञानस्वभावी आतम है पर, करता है यह राग अरु द्वेष।
राग भाव के विविधरूप हैं, जिनका फल पाता है क्लेश।।
भाव शुभाशुभ करते-करते, निज से दूर रहे मतिमंद।
सुख का कारण समझे जिनको, उनसे होता आस्रव बंध।।
आस्रव बंध महादुखदायी, दिखते भोले पर भाले हैं।
नाना रूप धारकर आते, कुछ गोरे कुछ काले हैं।।
विषयानुराग में फंस करके, यह जीव महादुख पाता है।
धन परिजन का हो अनुरागी, पाप ही पाप कमाता है।।
पाप उदय जब आता है, तब दुःखों से घबराता है।
करे पाप परिणाम नित्य ही, कुछ विचार नहीं पाता है।।
धन-परिजन-विषयानुराग में, पुण्य भाव भी नहीं होता।
भेदज्ञान तो कैसे संभव? फिरे चतुर्गति में रोता।।
हो कदाच धर्मानुराग तो, उनमें ही हो मस्त रहे।
पद-यश पाकर, उलझ जाये पर, भेदविज्ञान तो नहीं करे।।
अटकाने-भटकाने वाले, घर के बाहर बहुत खड़े।
होय स्वयं पुरुषार्थहीन तब, चतुर्गति में ही तो पड़े।।
भेदज्ञान है अति ही दुर्लभ, सावधान होकर करना।
पुण्य-पाप तो बहुत किये, अब भेदज्ञान ही है करना।।
भेदज्ञान से संवर होता, भेदज्ञान से निर्जर मोक्ष।
भेदज्ञान से शांति मिलती, भेदज्ञान बिन होता शोक।।
सतगुरु बारबार समझाते, निज-पर का तुम करलो ज्ञान।
निज में ही फिर करो 'समर्पण' अवसर आया महामहान।।

23.4.2015

20.

फरियाद

मित्रो! हम उसको कैसे कहें शुभ विवाह।
जिसमें असंख्य/अनंत जीवों की निकलती हो आह।।

रात्रि भोजन, जमीकंद, अरु द्विदल का बढ़ रहा प्रयोग।
पटाखे फोड़ने, और सड़कों पर नाचने का लगा है सबको रोग।

अहिंसा के पुजारी थे कभी ये, जो लगे हैं अब प्रदर्शन में।
पुण्योदय से प्राप्त वित्त को, लगा रहे बस फैशन में।।

पुण्योदय से प्राप्त सम्पदा, लगे पुण्य में तब हो बात।
अहंकार बस करे दिखावा, धन खर्चे निज करता घात।।

हट कर किया और हट कर दिया ही, सब रखते हैं याद।
फेरे, भोजन, अरु बारात, दिन में हो बस इतनी है फरियाद।।

9.12.2015

21.

दुनिया मतलब की

दुनिया मतलब की, दुनिया मतलब की।
बिन मतलब कोई बात न पूछे, दुनिया मतलब की।।

काम पड़े तो बनते यार, गले लगाकर करते प्यार।
बिना काम के सब बेकार, दुनिया मतलब की।।1।।

मतलब से ही भगवान जाप, मतलब से तू लगता आप।
गधे से भी कह देवें बाप, दुनिया मतलब की।।2।।

मतलब से सब लगते भाई, बिन मतलब तो आफत आई।
क्षण में अपने होंय पराई, दुनिया मतलब की।।3।।

जो देखो सब साधें मतलब, सारी दुनिया बनी मतलबी।
फिर भी सब जाने गाते-फिरते, दुनिया मतलब की।।4।।

तुम भी अपना मतलब साधो, निज आतम को ही आराधो।
पर की चिन्ता में मत जागो, दुनिया मतलब की।।5।।

13.8.2016

22.

तपन

तपन लगे है जब धरती में, प्यास लगे जब धरती को।
अकुलाहट होती अन्तर में, जल की चाहत धरती को।।

तीव्र उमस उमड़ी हो चहुँदिशि, सहन न होती है जब पीर।
बादल गर्जन करते आते, बरसाते तब शीतल नीर।।

चार गति दुखदायक भाये, विषयों में न मिलती छांव।
पद-पैसा-अरु परिजन लागे, जैसे आये हों पर गाँव।।

भाव शुभाशुभ भी जब भासें, मानों मछली को हो आग।
हे प्रभु हे प्रभु मुझे बताओ, कैसे दूर होय यह राग।।

अन्तर में ऐसी तड़पन हो, तब ही मिलता जिनवच नीर।
जनम-जनम की प्यास बुझाता, जन्म-मरण की मिटती पीर।।

सावन भादों बरस रहे हैं, तपन मिटाने कण-कण की।
बदरा दशलक्षण के छाये, पीर मिटाने जन-मन की।।

आओ हम सब पर्व मनायें, आतमहित का कर पुरुषार्थ।
राग-रंग में खो मत देना, अवसर खो ना जाये व्यर्थ।।
पूजन अरु स्वाध्याय करो नित, संयम सहित रहो दश दिन।
विषय-कषायों को तुम त्यागो, मंगलमय हो यह जीवन।।

23.8.2016

23.

विचित्रता

कर्मोदय की है विचित्रता, जग में क्या क्या होता है।
कोई, कभी, कहीं हंसता है, क्षण में वह ही रोता है।।
दुर्जन तो आदर पाते हैं, सज्जन को ठुकराते हैं।
ब्रह्मचारी को दोष लगे अरु व्यसनी आदर पाते हैं।।
है सुगंधमय चंदन किन्तु, खिलते उस पर पुष्प नहीं।
केसरिया पुष्पों भर किंशुक, पर उनमें कुछ गंध नहीं।।
मूर्खराज कहलाकर भी कतिपय कुबेर बन जाते हैं।
लक्ष्मी द्रोह सदा से पर, पंडित बन आदर पाते हैं।।
हंस खाये शैवाल परन्तु, मौक्तिक कौए खाते हैं।
श्वान घूमते निर् अंकुश, अरु वनराजा बंध जाते हैं।।
देखो दुनिया की विचित्रता, कीचड़ में है कमल खिला।
समझ न पाया कोई कैसे, रत्नाकर से जहर मिला।।
निज भावों से भव बनता है, निज भावों से बंधते कर्म।
भावों से ही भव अभाव हो, भावों से मिलता शिव शर्म।।
चित्र-विचित्र भावों से भाई, रखना निज को इतनी दूर।
जीवन में न हो विचित्रता, समता सुक्ख मिले भरपूर।।

27.8.2016

24.

सास-ससुर को सीख

मित्र-पुत्र के विवाह में जाने का अवसर आया।
खुशियाँ छाई थीं परिजन में, वधु संग बहु दहेज लाया।।
मित्र दंपत्ति को दे बधाई, हँस कर दीनी मैंने सीख।
सीख मित्र मानोगे यदि तो नहीं निकलेगी मुँह से चीख।।
मित्र तिया मुस्क्या कर बोली, क्यों निकलेगी मुँह से चीख।
सास बनी हूँ राज करूँगी, फिर भी दे दो क्या है सीख।।
मैं बोला भाभीजी सुन लो, राज करूँगी छोड़ो आस।
राज करन की सोचोगी तो, बनना पड़ सकता है दास।।
सुनकर दंपत्ति हुए अचंभित, बोले क्या कहते हो भाई।
बड़ी आशा और मनोकामना से घर में बहू है आई।।
मैं बोला अब सुनो ध्यान से, बहु भी बेटी होती है।
पढ़ लिख वह काम पर जाती, कभी देर तक सोती है।
पुत्र ने नव परिधान चुने हैं, बहू भी तब क्यों पीछे हो।
समय गया वह जब बहूरानी, गर्दन तक घूंघट खींचे हो।।
बहू की भी इच्छायें होतीं, वह भी जड़ नहीं चेतन है।
बेटी वत यदि प्यार करोगी, तो वह सुक्ख निकेतन है।।
पितुग्रह वह तजकर के आई, छोड़ा परिजन का सब प्यार।
अतः पुत्रीवत् उसे समझना, दिल से करना उसे दुलार।।
लाड़ प्यार से रखना उसको, धर्म मार्ग भी बतलाना।
पढ़ लिखकर ही अभी आई है, गृह कारज भी सिखलाना।।

करो प्रशंसा उसके गुणों की, और दोष को देना छोड़।
यही भावना और सरलता देगी उसको तुमसे जोड़।।
कालचक्र या कलयुग बोलो, सब कुछ बदला तेजी से।
सास-बहू के रिश्ते बदले, तुम भी बदलो तेजी से।।
मित्र दंपत्ति हंसकर बोले, तुम ही हो इक सच्चे मित्र।
हास्य कहो या सत्य कहो, पर दिखलाया सत्य चरित्र।।
बहू तो सच में बेटी ही है, पर तुम भी हो मेरे भाई।
खुशी का दिन है आज हमारे, बहूरूप में बेटी आई।।

28.8.2016

25.

पौरुष जगाओ

जो भी जन कुछ नूतन करते, निंदक बहुधा मिलते हैं।
बहु बाधाएँ विघ्न भी आते, जो भी पथ पर चलते हैं।।
विघ्न भयों अरु निंदा वच से, नीच पुरुष न काम करें।
आरंभ करते विघ्न यदि आयें, मध्यम जन विश्राम करें।।
बार-बार विपदायें आयें, या निंदक जन देवें दोष।
उत्तम जन तो कार्य तजें न, कार्य पूर्ण बिन न संतोष।।
भले काम को करने वाले विरले जन ही होते हैं।
दोष निकालें कर्ता जन के, या बहुतायत सोते हैं।।
यश अपयश तो कर्मोदय से, निंदक जन का क्या है दोष?
न्याय-नीति से काम करो तो खुद को मिलता है संतोष।।
दोष यदि अपने में है तो, सुनकर शीघ्र करें हम दूर।
जिनवच पर ही श्रद्धा करके दुष्कृत्यों को करेंगे चूर।।

31.8.2016

26.

उत्तम क्षमा

क्षमा क्षमा सब कोई कहे, क्षमा न जाने कोय।
निज स्वभाव जाने बिना, क्षमा कहाँ से होय।।
निज को न पहिचानना, ही अनंत दुःख क्रोध।
जिसे न निज का भान है, उसे न पर का बोध।।
निज आतम परिचय बिना, क्षमा मात्र उपचार।
मित्रों से लें-दें क्षमा, यह तो लोकाचार।।
लोकाचार निभाइये, और कहो व्यवहार।
पर निश्चय प्रकटे बिना, घटे नहीं संसार।।
भवदुख से भयभीत हो, स्व-पर शक्ति पहचान।
क्षमाभावमय हम सभी, सबकी शक्ति समान।।
फिर भी कोई त्रुटि रही, जाने या अनजान।
क्षमाभाव पूरित हृदय, वचनन करूँ बखान।।

17.9.2016

27.

बलवान कौन ?

कर्मोदय के कारण वन में सीता को पति ने छोड़ा।
कर्मोदय से सती अंजना से पति ने था मुँह मोड़ा।।
कर्मोदय के कारण चंदनबाला ने ठोकर खाई।
कर्मोदय के कारण ही तो शत्रु बने अपना भाई।।
सेठ सुदर्शन को अपमान मिला था उनको कर्मों से।
गुरुदत्त-सुकुमाल-सुकौशल पर, उपसर्ग हुआ था कर्मों से।।

पुण्योदय यदि न आये तो, व्यर्थ परिश्रम जाता है।
पुण्योदय यदि तीव्र होय तो बिन चाहे ही आता है।।
यह सब देख अज्ञ जन कहते, कर्म हमारा है भगवान।
सच में तो सब सुख-दुःख दाता, कर्म बहुत ही हैं बलवान।।

पर ज्ञानी जन ऐसा कहते, कर्म विचारे होते कौन ?
चूहे तब तक उछला करते, सोया सिंह है जब तक मौन।।
कर्मोदय की भी विचित्रता, ज्ञानी का क्या कर सकती?
विचरण करते गजराज को, क्या कमलनाल बांधा करती।।
भ्रमर भूल कर निज शक्ति को, कमल पुष्प में अटक रहा।
चेतनराजा होकर मोहित, चतुर्गति में भटक रहा।।

गुरुदत्त-सुकुमाल-सुकौशल, निजानन्द में मग्न रहे।
सुख शांति भोगें वे हर क्षण, दुखिया उनको जगत दिखे।।
सती सीता चंदनबाला ने, धारण कीना था निज धर्म।
निज परिणाम सम्हाला सबने, कहा न उनने दोषी कर्म।।
कर्म उदय हो विकट अरे, पर न चेतन जड़ रूप हुआ।
है अनादि से कर्म बीच पर, कहो एक गुण हीन हुआ ?

क्षण भर भी यदि चेतन जागे, मोह नृपति भागा फिरता।
ध्यान धरे अन्तर्मुहूर्त तो, केवलज्ञान-सुक्ख मिलता।।
है अचिन्त्य शक्ति का धारक, बना-बनाया है भगवान।
जब तक निज प्रभुता न जाने, कर्म तभी तक है बलवान।।
निज को जाने अरु पहिचाने, तीन लोक में तूं बलवान।
मोह भाव तज निज में रम जा, प्रकट बनेगा तूं भगवान।।

10.9.2016

28.

कोई नहीं है अपना

हे जीवराज
मोहनींद से तू जाग
संसार का स्वरूप जान
अब तू यहाँ से भाग।

इस संसार में कोई नहीं है अपना
फिर भी लगते अपने
यही है सपना।
जब तक तू करेगा सबकी इच्छापूर्ति
तब तक सब देंगे पद-सम्मान
इच्छा विरुद्ध होते या काम निकल जाते ही
करते हैं वही अपमान।

तू समझ चेतन!
कोई नहीं अपना जमाने में
सब लगे हैं, बैठे/चलते हुये को गिराने में।

सब तेरे ऊपर लुटा रहे हैं प्यार/पैसा
ऐसा मान कर तू है धोखे में
सच तो यह है
वे सब बैठे हैं लूटने के मौके में
गिद्ध और कौये की भांति नोचने को बैठे हैं तैयार
तेरे मरने का ही कर रहे हैं इंतजार

पद और माल झपटने को बैठे सभी तैयार
जो दिखते हैं पक्के यार
जो बनते हैं रिश्तेदार
वे हैं स्वार्थी रंगे हुये पक्के सियार
जो हैं छल छद्म से भरपूर
बाहर से पास, भीतर से दूर।।

कहते हैं जो–
आपके बिना काम होता नहीं।
मानते हैं वो
आप हैं, तो काम मेरा होता नहीं।
और
चाहते हैं जो–
आप जाओ/भागो/मरो
तो पद प्रतिष्ठा मुझे मिले।

चेतन जागो!
इस दुखद मोह को त्यागो
पर/पद को अपनाने
उसमें से सुख पाने के लिए
अब मत भागो।
तू है स्वयं अनंतगुणों से भरपूर
ऐसा स्वीकार कर
कर दे अज्ञान/मोह का चकनाचूर।।

5.9.2015

29.

कहान गुरु के शिष्य ''युगल''

देख/सुनकर ''युगल''
दृग/कर्ण हो गये सफल
दिया जिन्होंने शीतल जल
मिथ्यात्व ताप को हरने
पढ़ा समयसाररूपी गारुड़ी मंत्र
विषय–कषायरूपी नाग के
जहर को उतारने।

बताया जिन्होंने–
द्रव्य–भाव–नोकर्म शून्य
पर्यायों व गुण भेद से भी पार
चिरन्तन–चैतन्य।

जिसमें–
पर का कर्तृत्व–भोक्तृत्व–स्वामित्व तो दूर
ज्ञेयकृत अशुद्धता भी नहीं।
जो है–
नित्य सहज ज्ञाता,
मिथ्यात्व दशा में भी परिपूर्ण
और
अकारण शुद्ध।

जिन्होंने समझाया–

कैसे ? कब ? कितना ? पिओ पानी
जीव मात्र के प्रति बोलो
वात्सल्य भरी वाणी।

धार्मिक ही नहीं,
पारिवारिक व व्यावसायिक क्रियाओं में भी हो
सदैव
विवेक व यत्नाचार
जीवन में सुरभित हो
सदाचार/श्रावकाचार
जीवन का उद्देश्य हो मात्र
आत्मदर्शन
पर ना करना मात्र प्रदर्शन
तभी प्राप्त होगा
चैतन्य चिंतामणि समयसार का दर्शन

यह सच है कि
कीचड़ में कमल खिलता है
पर कीचड़ का लक्ष्य छोड़ने पर ही
मनमोहक कमल मिलता है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति को
नहीं चाहिये ज्यादा अकल,
पर चलती नहीं
इसमें किसी की भी नकल।
मूंगफली छीलकर,

छिलके को फेंककर,
स्वादिष्ट दाने जो भी खा सकता है
बस इतने/ऐसे ही ज्ञान से
देह से भिन्न
चिदानंद को भी पा सकता है।।

उज्ज्वल कुन्द अरु धवल
अरस-अरूप अरु अगंध
चिन्मय-चिद्रूप-चैतन्य की
सरल/सरस/सहज चर्चा सुना
युगल कर्ण किये सबके सफल
धन्य हैं
गुरु कहान के शिष्य वे ''युगल''

22.10.2015

30.

दश-हरा

हे आतमराम जागो!
अनादि की मोह निद्रा को त्यागो
बंध, सत्ता, उदय, उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण
आदि दशमुख वाले अभिमानी कर्मरूपी रावण ने
हरण कर लिया है
तुम्हारी शान्तिरूपी परिणति सीता का।
परिणति थी भोली

मोहक मोह के बहकावे में
स्वचतुष्टय की मर्यादा तोड़ी
फलस्वरूप हो गया अपहरण
उसे तुम्हारे सिवा नहीं कोई शरण।
अब आप शीघ्रता से उठो
मोह वाहिनी सेना पर विजय पाने को
कमर कसो,
अपनी करण रूप सेना को
युद्ध के लिए करो तैयार
मोह रावण पर करो प्रहार
उसके वंश का करो संहार
नाश करोगे कर्म के बंधादि दश चेहरा
सभी कहेंगे सच में आप ही हो दश हरा।।
लोक में होंगे मंगल गीत,
निज से लगेगी सबको प्रीत
पर घर गई परिणति सीता को
लौटा कर निज घर में लाओ
क्षमा-मार्दव-आर्जव आदि गुणों के
दीपक जलाओ, और
अनंत लक्ष्मी पाकर,
अनंत काल खुशियाँ मनाओ।।

22.10.2015

31.

अन्याय

दो पार्टनर मिलकर करते हैं व्यापार।
करते हैं परिश्रम, बनकर पक्के यार।।
पहला है उनमें थोड़ा समझदार।
पर दोनों में है विश्वास और प्यार।।
धीरे-धीरे पहला होशियारी है दिखाता।
दोनों की मेहनत/सम्पत्ति को अपनी ही बताता।।

दूसरा था भोला, न कुछ कह पाता है।
आधे का हकदार था, पर सब कुछ गंवाता है।।
हुआ है अन्याय पर कोई कुछ न कह पाता है।
क्योंकि हर कोई दूसरे का ही माल दबाता है।।
परन्तु प्रकृति में कभी भी अन्याय होता नहीं।
होता है न्याय हर पल, पर दिखता है कभी कहीं।।

पहला है जीवराज, दूसरा जड़ काया है।
ज्ञानमात्र चेतन है, शेष जड़ की माया है।।
जीवराज नासमझी को समझदारी/होशियारी बताता है।
काया की माया को भी अपनी ही दिखाता है।
मैं ही गोरा काला हूँ, जोर यह दिखाता है।।
मोटा पतला होना, आना और जाना मुझको ही आता है।
मैं ही खाता-पीता हूँ, रोता और गाता हूँ।
सारी यह फैक्ट्री मैं ही चलाता हूँ।।

काया तो भोली थी, कुछ भी न बोली।
चेतन की बोली तो, चले मानो गोली।।
पर प्रकृति में तो सदैव न्याय ही है होता।
चेतन नरक निगोदों में आज तक फिर रहा है रोता।।

हे चेतन अब तो चेतो! करो स्व-पर के साथ न्याय।
तन-धन-परिजन को भी निज मानने का तज अन्याय।।
बनोगे ईमानदार तब होगा मुक्ति का वरण।
बनोगे जगत पूज्य, मिटेगा अनादि का जनम मरण।।

5.9.2015

32.

दीपावली

पंचमकाल का दुखद आश्चर्य
भोर की बेला में हो गया सूर्य अस्त
छा गया चतुर्दिक् अंधकार
सारी वसुधा यह देख हुई
दु:खित/भ्रमित/भयभीत
अब क्या होगा हमारा?
छूटा त्रैलोक्य का सहारा,
जीव मात्र है अनादि से मोह से त्रस्त
अब कौन करेगा उसे मोक्षमार्ग को प्रशस्त
क्योंकि हो गया मोक्षमार्ग प्रकाशक सूर्य अस्त।

विज्ञजन करने लगे विचार,
जब नहीं होता है सूर्य का प्रकाश
तब समझदार प्राणी
न घबराते हैं न ही भय खाते हैं
छोटा ही सही पर
भयनाशक, मार्गप्रकाशक
दीप जलाकर
उससे ही काम चलाते हैं।

हे बंधु!
मत घबराओ
तुम भी इक ज्ञान दीप जलाओ
घर-घर अरु घट-घट में
सम्यज्ञान के दीप जलाओ

सूर्य अस्त हुआ तो क्या हुआ?
रोने से नहीं होगा प्रकाश
निज शक्ति का ही होगा ह्रास
रात अंधियारी और लम्बी ही है होने वाली
इसीलिये
सम्यग्ज्ञान के दीप घर-घर जलाकर
रोज ही मनाओ दीवाली।।

6.11.2015

33.

नव वर्ष (वीर नि. सं.)

२५४१ गया ४२ आया
आने और जाने पर
वाट्सएप-फेसबुक पर सबने ही
जमकर धमाल मचाया।
पर क्या किया है विचार कभी
संवत् के आने और जाने पर
हमने क्या खोया, क्या पाया ?

निज आत्मा की साधना/आराधना कर
वीर प्रभु ने तो सिद्ध पद पाया
हिंसा और क्रियाकाण्ड को भी दूर भगाया
पर से निवृत्ति और स्व में प्रवृत्ति को
सच्चा धर्म बतलाया
और हमने
वीर का नाम व संवत् तो चलाया
परन्तु
अनादि के संस्कारवश हमें
स्व से निवृत्ति व पर में प्रवृत्ति करना ही सुहाया
वीतरागाय नमः लिखकर भी
राग-द्वेष-मोह पर ही मन ललचाया
अपरिग्रही को पूजकर
परिग्रह में ही मन भरमाया

बस इसीलिये
अनंत दु:ख पाया।

अब
सन्मति के नाम को ही नहीं
उनकी सन्मति को भी अपनाना होगा
सन्मति की सन्मति से मम मति सन्मति हो
यह अलख जगाना होगा।।

मित्रो !
स्वानुभूति ही स्वाधीन/अनंत सुख का है मार्ग
यह
वीर-महावीर का ही नहीं
यह तो है सत्य सनातन मार्ग
अहिंसा-अनेकान्त-अध्यात्म-अपरिग्रह के सिवाय
शेष सब हैं उन्मार्ग।।

भगवान महावीर के सिद्धान्तों को
जीवन में अपनाना होगा
पर के एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व को ही नहीं
ज्ञातृत्व के भी मोह को त्यागना होगा।

मैं हूँ अकर्ता और ज्ञायक
ऐसा ही श्रद्धान हो
जीवन में सदाचार, विनय अहिंसा सह
देव-धर्म-गुरु का अटल श्रद्धान हो।
वात्सल्यपूर्वक करें हम निज पर में

सद्धर्म की प्रभावना
२५४१ का करें हम लेखा जोखा
करें कुछ नया संकल्प आगे बढ़ने का
महावीर की वाणी को पढ़ाने अरु पढ़ने का
तभी हम सच में कह सकेंगे
२५४१ गया और ४२ आया।।
कार्तिक शुक्ला एकम २५४२

12.11.2015

34.

ज्ञानदीप

ज्यों
दिखते हुये तार में
अनदिखता करंट निरन्तर प्रवाहित है
उसके होने का पता लगता है
तब,
जब बल्ब जलता है या
जोर से झटका लगता है।।
बस त्यों ही
दिखते हुये गोरे काले शरीर में
अनदिखता चैतन्य आत्मा सर्वांग रहता है
पर उसके होने का अहसास होता है तब

जब
नित्य प्रकाशित ज्ञानदीप को देखता है
या फिर
राग-द्वेष अरु दु:खों का झटका लगता है।।

14.12.2015

35.

चेतन नाम सार्थक करो

अय चेतन!
समय रहते चेतकर
चेतन नाम सार्थक करो।
खाते-पीते, सोते-जागते
धर्म छोड़ धन के पीछे भागते
अनर्थदण्ड करते-कराते
यदि जीवन बीता
और धर्म से रह गया रीता
तो बंधु!
आयु का नहीं है भरोसा
कब? कैसे? कहाँ ? पूर्ण हो जाये
और अवसर बीत जाये।
ध्यान रखना मृत्यु
भारतीय रेल नहीं है जो
कभी-कभी समय पर आती है।

यह हवाई जहाज भी नहीं है
जो किसी पुण्यवान के लिए रुक जाती हो।
और आपका इंतजार कर ही मंजिल पर पहुँचाती हो।

यह पूर्ण अरागी व्यवस्था है
प्रतिपल जहाँ बदलती तेरी अवस्था है।
कहीं ऐसा न हो जाये
दूध-पानी, चाय पत्ती की व्यवस्था करते-करते
व्यर्थ में जलते चूल्हे की गैस ही खतम हो जाये।
अत: मेरे मनमोहक चेतन
समय रहते चेतकर
चेतन का करो नाम सार्थक।

26.11.2015

36.

व्यापार

सबसे नहीं
पर उनसे जो
हमसे करें सद्व्यवहार
उनसे सद्व्यवहार करना
क्या इसे
सद्व्यवहार कहेंगे ?

सबको नहीं
पर उन्हें जो

हमें देते हैं उपहार
उन्हें उपहार देना
क्या इसे
उपहार देना कहेंगे ?

योग्य जन को नहीं
पर उन्हें जो
करते हैं हमें नमस्कार
उन्हें नमस्कार करना
क्या इसे
नमस्कार करना कहेंगे ?

गुणों/अपनों से नहीं
पर जो हमें करते हैं प्यार
मात्र उनसे प्यार करना
क्या इसे प्यार करना कहेंगे ?

आप कुछ भी कहें
पर
हम तो इसे व्यापार करना कहेंगे।

मंदिर की शोभा हेतु जिन प्रतिमा चाहिए।
स्वाध्याय सभाओं में जिनवच ही चाहिए।।
घर-घर, द्वार-द्वार होय तत्त्व का प्रचार।
साधर्मी हृदय मांहि बस वात्सल्य चाहिए।।

37.

भक्ति

जहाँ जीवित है प्रत्याशा
वहाँ
भक्ति/प्रेम/आदर
हो नहीं सकता
क्योंकि
भक्ति/प्रेम/आदर में
विनिमय की अपेक्षा नहीं होती
मात्र होता है
निरपेक्ष/निर्वांक्षक समर्पण
मात्र उनसे व उनके गुणों के प्रति अनुराग
अर्थात्
मात्र उनके बताये मार्ग पर
चलने का राग।।

38.

दृष्टि

एक सती की दृष्टि में
उसका पति
गोरा-काला, मोटा-पतला
या
गरीब-अमीर, मूर्ख-विद्वान्

नहीं
बस, पति होता है
इसी तरह
सम्यग्दृष्टि की दृष्टि में
ज्ञायक/आत्मा
रागी-द्वेषी, कामी-क्रोधी
भेद-अभेद, शुद्ध-अशुद्ध
प्रमत्त-अप्रमत्त, बद्ध-अबद्ध नहीं
बस
ज्ञायक/आत्मा ही होता है

39.

बंजर भूमि

ज्यों
बंजर/पठारी भूमि में
कितना भी जल सिंचन करें
उत्तम खाद-बीज वपन करें
पर वहाँ
अंकुरण नहीं होता
खाद-बीज-परिश्रम सब
व्यर्थ ही होता।
त्यों
कषायों से संतप्त

विषयाभिलाषा से संलिप्त
हृदय में
कितना भी भक्ति वैराग्य का
जल सिंचन करें
तत्त्वज्ञान का बीज वपन करें
पर वहाँ
सम्यक्त्व का अनुकरण नहीं होता
भक्ति/वैराग्य का जल
एवं
तत्त्वज्ञान के बीज
व्यर्थ ही हैं होते
यहाँ तक ही नहीं
अज्ञानता में कई बार तो
अनर्थ भी हैं होते।

14.6.2016

40.

हम

हम
भवभय नाशक जिनवाणी
पढ़ाते तो हैं पर
पढ़ते नहीं।

हम
सबको सुखदायक तत्त्वज्ञान

समझाते तो हैं, पर
समझते नहीं

हम
वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की
पूजन करना सिखाते तो हैं, पर
स्वयं करते नहीं।

हम
आत्महित के मार्ग पर
सबको चलाते तो हैं, पर
चलते नहीं।

हम
अनंत संसार के भय से
सबको डराते तो हैं पर
डरते नहीं।

बस इसीलिए हम
धर्म/सुख के मार्ग पर
सबको बढ़ाते तो हैं पर
स्वयं बढ़ते नहीं।।

25.6.2016

सत्य वचन कहना सदा, है प्रशंस्य यह कार्य।
हित-मित-प्रिय न बोलते, कैसे हो स्वीकार्य?।।

41.

चिड़िया

एक चिड़िया
तिनका–तिनका जोड़कर
अपनी विशिष्ट तकनीक व प्रतिभा से
बनाती है अपना घोंसला
अपना प्यारा/सुन्दर घर
परन्तु
कभी प्रकृति तो कभी बन्दर आकर
तोड़ देते हैं उसका घर।
चार घर छूटने/टूटने के बाद
जब चिड़िया ने बनाया पाँचवाँ घर
प्रमुदित/पुलकित हो अपना सब कुछ देकर
उसे लगा था
मानो यह पाँचवाँ घर
चार गति का अभाव कर
पंचम गति समान मिला है
उसके समान यह भी ध्रुव रहेगा
घोंसला था बहुत ही सुन्दर व प्यारा
चिड़िया का हो रहा था सुखपूर्वक गुजारा।
परन्तु हा !
प्रकृति को दोष दें या वानर को
तिनका–तिनका जोड़ बनाया घर

आँखें आंसू भर
उसे छोड़ना पड़ा
टुकर–टुकर अपनी नियति को देखना पड़ा
आज फिर
चिड़िया ने
नये उत्साह व उमंग से
नया घोंसला बनाया है
अब रहूँगी सपरिवार सुरक्षित व सुखी
सपना सजाया है
ये दुनिया वालो !
देना शुभकामनायें चिड़िया को
अब न तोड़े कोई उसके घर को
क्योंकि
घर को बनाना/बसाना
बहुत ही श्रम/कष्ट साध्य होता है
वह घर जब टूटता/छूटता है तब
उस वेदना का ना पार होता है
अत: जब तक चिड़िया के
मोह/संसार का ना हो नाश
तब तक किसी भी चिड़िया के
घर का ना हो विनाश
पर सच तो यही है न
बनते/बिगड़ते घर में

जीवन और मरण में
सुख-दु:ख, लाभ-हानि में
स्वयंकृत परिणाम ही हैं कारण
पर को दोष देना है अकारण
इस सत्य की स्वीकृति बिना
नहीं होता निस्तारण

2.7.2016

42.

योग्यता

जैसे
करण्ट एक ही प्रवाहित होने पर भी
हीटर गरमी, तो
कूलर/एयरकंडीशनर ठंडक देता है
पंखा चलता है तो
बल्ब जलता है
फ्रिज सामग्री ठंडा करता है तो
कारखानों में तरह-तरह के काम होते हैं
क्योंकि
कार्य निमित्त के अनुसार नहीं
अपनी उपादानगत योग्यता से होता है
वैसे ही
जिनेन्द्र की दिव्यध्वनि या
वक्ता के प्रवचन/कक्षा तथा

समवसरण/मंदिर
समान होने पर
कोई मुनि तो कोई देशव्रती होता है
कोई सम्यग्दर्शन प्राप्त कर मिथ्यात्व धोता है
तो कोई मिथ्यात्व का ही पोषण कर
चार गति में रोता है
क्योंकि
कार्य तो सदैव अपनी उपादागत योग्यता से होता है
अत: मित्रो !
जब भी कार्य होता है तब
निमित्त भी होता है
परन्तु
कार्य निमित्त से नहीं
उपादान अर्थात् स्वयं की योग्यता से ही होता है
निमित्त की दृष्टि/महिमा
हमें
पराधीन/गुलाम बनाती है
और उपादान की दृष्टि
स्वाधीनता प्रगटाती है
मित्रो!
स्वाधीनता में ही सुख/शान्ति होती है
अत:
पराधीनता/गुलामी का मार्ग छोड़ो
बस निज से ही नाता जोड़ो।।

5.7.2016

43.

भीड़ में भी अकेले

जिस तरह
1025 फेसबुकिया मित्रों
एवं वाट्सएपिया परिवारों (समूहों)
के बीच
आदमी निरा अकेला है
ये फेसबुकिया मित्र व परिवार
चरित्र नहीं चित्र देखकर ही
मित्र बनाते व बनते हैं
सुख-दुःख की अनुभूति बताने पर
हंसता-रोता बना बनाया चेहरा
या
अंगूठा (लाइक) ही दिखाते हैं
हजारों मित्रों ? में से
न कोई आकर सुख बढ़ाते हैं
न ही दुख घटाते हैं
केवल और केवल
अपनों की भरमार होने का भ्रम ही बढ़ाते हैं।
बस इसी तरह
आज के इस भौतिकता/आधुनिकता
अर्थात्
कुछ सच की तो कुछ ओड़ी हुई व्यस्तता

के जमाने में
कार्ड बांटने व भोजन कराने के लिए तो
हजारों मित्र हैं
जो शादी में आकर बन्द लिफाफा पकड़ाने
मरने पर शाम को ही उठावना करवाने
दौड़े चले आते हैं
परन्तु
काम पड़ने पर अक्सर अंगूठा ही दिखाते हैं
और हम
ऐसे मित्रों/परिजनों के लिए
निज धर्म को गंवाते हैं।
मित्रो सावधान !
बहुमूल्य जीवन व जिनधर्म पाकर
वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु जैसे सन्मित्र
एवं
वीतरागता के उपासक साधर्मी पाकर
यदि हमने
फर्जी मित्रों व स्वार्थी परिवार/संसार
में अपनापन कर यदि समय गंवाया
विषय-कषायों में अपने को फंसाया
तो समझना
हमने व्यर्थ ही नरतन पाया और गंवाया।।

10.7.2016

44.

जनवाणी और जिनवाणी

एक ओर
मोह से आच्छादित
स्व-पर विवेक रहित
सर्वज्ञ के मार्ग से च्युत
विषय-कषाय-अज्ञान से संयुक्त
वे जीव
जो कभी प्रवचन नहीं सुनते हैं
चने के झाड़ पर चढ़ाते हुए कहते हैं
'आप बहुत अच्छा प्रवचन करते हैं'
मैं यह जानता हुआ भी कि
वचन जड़ का कार्य है
प्रमुदित होता हूँ
कोई कहता है
आपका प्रमोशन होने वाला है
मैं यह जानते हुए भी कि
धन-समाज-पद आदि का मिलना पुण्याश्रित है
जीव को उससे कुछ लाभ नहीं फिर भी
प्रसन्न होता हूँ
कोई कहता है
आपके द्वारा संस्थान का संचालन अच्छा हो रहा है
मैं यह जानते हुए भी कि
वस्तु का परिणमन स्वतंत्र है

कोई किसी का परिणमन/संचालन कर नहीं सकता
फिर भी कर्तृत्व का अहंकार करता हूँ
कोई कहता है
आप यहाँ के अध्यक्ष/मंत्री/ट्रस्टी हैं
मैं यह जानते हुए भी कि
स्व चतुष्टय से बाहर
मेरा रंचमात्र अधिकार नहीं फिर भी
मैं अधिकारी बनकर
वहाँ का मालिक बनता हूँ
दूसरी ओर
वीतरागी/सर्वज्ञ परमात्मा एवं
अकारण करुणावन्त
निर्विकार आचार्य भगवन् कहते हैं
तुम सिद्ध समान हो
अजन्मे, अरूपी, अकर्ता, अभोक्ता हो
ज्ञानानन्दस्वभावी हो
भगवान आत्मा/कारण परमात्मा हो
मैं यह सुनता तो हूँ
गर्दन हिलाता तो हूँ
परन्तु प्रसन्नता नहीं होती
मन मयूर नर्तन नहीं करता
क्योंकि मैं
द्रव्य की चर्चा भी
पर्याय में बैठकर (अपनापन कर) ही सुनता हूँ

22.7.2016

45.

सेल्फी

गर्दन को आगे-पीछे करते
नजरें घुमाते
कभी मुस्कराते तो कभी खिलखिलाते
एक हाथ में मोबाइल ऊपर-नीचे करते
एक युवा को देखकर मैंने पूछा
बेटा यह क्या कर रहे हो ?
वह बोला -
आप क्या समझो दादाजी
मैं सेल्फी ले रहा हूँ।
मैंने पूछा
बेटा यह सेल्फी क्या होती है ?
वह बोला
दादाजी यह सब आपकी समझ से दूर
सेल्फी में होता है
चमकता-दमकता अपना ही नूर
मैंने कहा
हाँ बेटा
मैं तो ठहरा गाँव का गंवार
मोबाइल की हमारे जमाने में नहीं थी बहार
पर बेटा
तुमने बताया कि सेल्फी में होता है अपना ही नूर

पर मैं तो देख रहा हूँ
तुम्हारे मोबाइल की सेल्फी तो है अपने से दूर
इसमें तो कपड़े और नकली हँसी वाला है चेहरा
इन सब पर तो है जड़ पुद्‌गल का ही पहरा
पर राग ही मैं व मेरा नहीं
तो फिर
यह गोरा काला रंग
जो क्षण-क्षण में होता है बदरंग
अरे हंसी भी तो हास्य कषाय के उदय में होती है
अन्यथा हँसने चाहने पर भी
सूरत रोती है
यह सब सेल्फ व
इनकी फोटो सेल्फी कैसे हो सकती है ?
चैतन्य व अरूपी आत्मा
जड़ व गोरी काली कैसे हो सकती है ?
यह सब सुनकर युवा चकराया
बोला दादाजी आपने तो
आत्मा आत्मा कहकर मुझे बहुत डराया
मैंने कहा बेटा !
मैं हूँ भोलाराम
नहीं डराना मेरा काम
आत्मा ही नहीं गोरा काला चाम

आत्मा अर्थात् मैं तो
अनादि-अनंत-अजर-अमर हूँ
ज्ञानानंदमयी परिपूर्ण हूँ
मेरा तो है सिद्ध स्वभाव
जिसका होता नहीं कभी अभाव
बेटा राम
अपनी ज्ञान परिणति में
जब ऐसी आत्मा झलकायेगी
तभी झलकेगा निज का नूर
होगा सुख भरपूर
तभी सच्ची सेल्फी कहलायेगी

23.7.2016

46.

होने से - नहीं मानने का फल

हूँ अजन्मा
पर
जन्मदिन मनाता हूँ
हूँ अरूपी
पर
रूप पर इतराता हूँ
हूँ अकर्ता
पर
कर्ता बन इठलाता हूँ

हूँ मात्र ज्ञाता और असंयोगी
पर
संयोगों को अपनाता हूँ
बस इसीलिए
हूँ सुख का भण्डार
पर प्रतिक्षण दुख ही उठाता हूँ

23.9.2016

47.

आज चौदस है

हाँ, आज चौदस है
पंचमी से आज तक
देव-शास्त्र-गुरु की
की है आराधना
जिनवचनों को सुना है, समझा है
अब उन वचनों में अर्थात्
जिनस्वरूप निजात्मा में रमका
बस दो चार भव में ही
चौदह गुणस्थान से पार
शीघ्र ही जाऊँगा
फिर लौटकर इस भव में नहीं आऊँगा
हाँ आज चौदस है
पंचमी से आज तक

पूजन/भक्ति/स्वाध्याय में
समय है लगाया
जिन वचनामृत सुनकर आनंद है आया
पर हाँ ! अब कल से कौन जिनवचन सुनायेंगे ?
और हम भी पुरुषार्थहीन
अब कहाँ जिनमंदिर जायेंगे ?

वाह आज चौदस है
पंचमी से आज तक के खाने-पीने
मंदिर आने-जाने के नियमों से होऊँगा मुक्त
खेलूँगा-खाऊँगा टी.वी. देखूँगा उन्मुक्त
मंदिर/पूजन/स्वाध्याय से हुई
आज से कुट्टी
हा हा हा आज चौदस है
एक वर्ष की लम्बी मजेदार छुट्टी

हाँ आज चौदस है
साधर्मियों को मेला बिछुड़ने वाला है
स्वाध्याय भवनों में लगने वाला ताला है
काश ! इन पर्वों से प्रेरणा लेकर
आत्महित के मार्ग में छोटा सा कदम उठायें
तब हम निश्चित ही शीघ्र ही
सच्चा सुख पायें

15.9.2016

48.

जिसे जो समझा, वह वैसा न निकला

परिजन
अपने हैं
सुख दुख के साथी हैं
पर
साता या असाता में
परलोक गमन में
कोई न आया काम
कोई न दे सका साथ

धन
अपने ही बल कमाया है
चल-अचल सम्पत्ति
सब हैं मेरे नाम
यह सब तो आयेंगे मेरे काम
पर कागजों पर ही नाम लिखा रह गया
और
धरा का धन धरा ही धरा रह गया
मैं रोते-रोते अकेला ही चला गया

तन
कोई दे साथ या न दे
पर तन तो मेरा है पक्का यार
मैं इसे ही करता सबसे अधिक प्यार
इसकी सुविधा के लिए ही

कितने तिकड़म करता रहता हूँ
इसे तो मैं, मैं ही समझता हूँ
पर
यह भी अपनी मर्जी का मालिक निकला
मेरी इच्छा के अनुसार तो
सफेद होता बाल भी न बदला
और किसके बारे में कहूँ यार
शुभाशुभ राग, क्रोध या सम्मान
जिन्हें मैं अपने कर्त्तव्य मानता हूँ
वह भी मेरी चाह के अनुसार नहीं होते
अब जब शान्ति से विचार करता हूँ
तब अपने मिथ्या अहंकार पर हंसी आती है
पर को अपना मानने/बनाने
या अपने अनुसार चलाने का
श्रम व भावना मिथ्या नजर आती है।
सच में अभी तक जिसे जो समझा
वह वह नहीं कुछ और ही निकला
पर प्रसन्न हूँ यह देखकर कि
मैंने स्वयं को भी
मूर्तिक/दीन/अनाथ/रागी-द्वेषी
समझा था
पर मैं तो अमूर्तिक/परिपूर्ण/अनादि-अनंत
अरागी व ज्ञानानंदस्वभावी निकला

16.8.2016

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

महत्त्वपूर्ण बिन्दु